रिकॉर्ड :– किसने यह सब खेल रचाया.... देहली ॐ पिताश्री 7/1/63
बच्चों ने गीत सुना। ये जो अंधेरे में पड़े थे और इस समय अंधेरे में हैं। ब्रह्मा की रात थी, कल्प पहले भी थे, अब भी हैं। सब पतित हैं। ज़रूर कोई ने पावन किया था। कहते हैं– पतितों को पावन बनाए अंधेरे से सोझरे में लाए। सभी कुछ करके फिर खुद छिप गए। सतयुग में ब्रह्मा का दिन था, सोझरे में थे। कलियुग को कहा जाता अंधेरा। महा दुखी, मोहताज, कंगाल हैं सब। किसने हीरे की तरह बनाया अर्थात् मनुष्य को दैत्य से देवता बनाय फिर छिप गया? ये कौन था? बाप बैठ समझाते हैं– मैं ही स्थापना और विनाश का कार्य कराता हूँ। अब ये कौन कहते हैं? क्या कोई मनुष्य कह सकते या ये दादा कह सकते हैं? नहीं, ये भी घोर अंधियारे में थे। इस समय सारी सृष्टि घोर अंधियारे में है। इस समय सरसों मिसल मनुष्य हैं। अब बाप ने तुम बच्चों को दिव्य दृष्टि दी है। इस ड्रामा के आदि–मध्य–अंत को जान गए हो। और कोई मनुष्य नहीं, जो मुझ परमपिता परमात्मा को जानता हो; क्योंकि मैं छिप गया। इस नॉलेज से भारत को पतित से पावन बनाए मैं फिर छिप गया। अब ये कोई मनुष्य तो नहीं कहेंगे। मनुष्य हैं घोर अंधियारे में। भक्तिमार्ग को ठुकर मार्ग कहा जाता, भगवान से मिलने लिए ठोकर खाते रहते हैं। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं– 5000 वर्ष पहले हम क्या करके गए थे। बरोबर महाभारत लड़ाई भी लगी थी। मैंने तुमको सहज योग सिखलाया था। किसने? क्या ब्र०वि०शं० ने? रा०कृ० ने? नहीं। शिवबाबा कहते हैं– मैं तुमको राजयोग सिखलाय और फिर छिप गया। अब फिर भी भारत में वो ही ल०ना० राज्य स्थापित करता हूँ। पूजा भी ल०ना० की करते हैं। ये (साकार) खुद पूजा करने वाला है। खुद कहते हैं– मैं भी पतित था। भक्ति करते थे। देवी–देवताएँ, जो पूज्य थे, वो फिर पुजारी बने हैं। फिर ल०ना०, राम–सीता, उनकी प्रजा भी होगी, उनके पुजारी भी होंगे ना। ल०ना०, राम–सीता को पूजते हैं। प्रजा को तो नहीं पूजेंगे। बरोबर वो डबल सिरताज थे; परन्तु ये कोई नहीं जानते कि भारत को स्वर्ग किसने बनाया। कई पूछते हैं– ये कोई शक्ति है? ऐसे तो नहीं। बहुत गुरु लोग हैं जिनके लिए कहते हैं, इनमें शक्ति है। कोई कैंसर निकाल देते हैं, कोई सा० कराते हैं– ऐसे रिद्धि–सिद्धि वाले बहुत हैं। यहाँ तो यह नॉलेज है। समझना है। बाप कहते हैं– तुम तो सभी को भगवान कहते रहते हो। हनुमान बन्दर का सा० कराता हूँ तो तुम समझते हो, यह भी भगवान है; परन्तु ऐसे थोड़े ही है। मैं सर्वव्यापी थोड़े ही हूँ। अच्छा, तुम कहते हो– सर्वव्यापी है। इनमें भला क्या हुआ? सर्वव्यापी समझते तो तुम तो नर्कवासी बनते जाते हो। तुमको सतो से रजो–तमोगुणी बनना ही है। 5 तत्वों को भी तमोप्रधान बनना ही है। आधा कल्प तुमने भक्ति की है। दिन और रात है। जब ज्ञान की अवस्था पूरी होती है तो फिर भक्ति शुरू होती है। भक्ति भी कलियुग अन्त तक आनी ही है। अव्यभिचारी से व्यभिचारी बननी ही है। अब इसमें शक्ति क्या है! यह तो बाप है। कहते हैं– मैं मनुष्य सृष्टि का बीज चेतन, नॉलेजफुल हूँ। तो ज़रूर सृष्टि चक्कर का मेरे में नॉलेज होगा। इसमें शक्ति की बात क्या है! बाप समझाते हैं, अब यह भक्तिमार्ग मुर्दाबाद होता है। ज्ञान सूर्य प्रगटा..... वो सूर्य–चाँद तो बत्तियाँ हैं। यह ज्ञान सूर्य की बात है। तुम जानते हो, हम सूर्यवंशी थे। जापान तरफ फिर वो लोग सूर्य का झण्डा आदि लगाते हैं। बच्चे भूल गए हैं। अब बाप भक्तों को भी समझाते हैं। सबसे बड़ा नं०वन यह (साकार बाबा) भक्त है। पूज्य था फिर पुजारी बना। तुम सभी पुजारी थे, अब फिर ज्ञान से तुम पूज्य बनने वाले हो। फिर हम पूजा किसकी करें? जानते हैं, शिव तो हमारा बाप है, वर्सा देते हैं। तो मैं क्या करता हूँ? सब कुछ करके फिर अपन को छिपाया है। मैं ऐसा छुप जाता हूँ जो मुझे सतयुग में देवी–देवताएँ भी नहीं जानते। ऋषियों–मुनियों को भी पता थोड़े ही है कि संगमयुग भी होता है। यह है नई सृष्टि कल्याणकारी। संगमयुग है चोटी; क्योंकि बाप बैठ इन ब्राह्मणों द्वारा सभी को नॉलेज देते हैं। नाम ही है– शिवशक्ति पाण्डव सेना। यादव–कौरव–पाण्डव क्या करत भय? विजय किसकी हुई? शास्त्रों में भी लगा हुआ है– कौरवों की अक्षौणी सेना थी। कौरव माना कुरु। कुरु माना काँग्रेस। काँग्रेस माना प्रजा का प्रजा पर राज्य। इन सभी बातों को पहले

थोड़े ही जानते थे। ब्र०वि०शं० का चित्र उठाए कहते हैं– त्रिमूर्ति ब्रह्मा। शिवबाबा को तो भूल गए हैं। अभी तुम जान रहे हो– भगवान क्या है, उनसे क्या लेना है। आगे तुम थोड़े ही जानते थे। तुमको क्या पता कि भगवान से क्या माँगना होता है। कोई को पता नहीं, भगवान बाप से क्या मिलता है। मेरे लिए ही कहते हैं– हेविनली गॉड फादर, नई दुनिया स्थापन करने वाला क्रियेटर है। खुद बैठ समझाते हैं– मैंने ही तुम बच्चों को सुख दिया था। आत्मा ही सुख अथवा दुख भोगती है। नॉलेज भी आत्मा ही धारण करती है। हे भारतवासी, तुमको कितना सुख था! तुम पूज्य थे। अब माया ने तुमको पुजारी, पतित बनाए दिया है। पतित को पावन तो फिर बाप ही करेंगे। बाप पावन बनाए फिर छुप गया। वहाँ तुमको याद करने की दरकार ही नहीं होगी। यह नॉलेज प्रायःलोप हो जावेगी। इस समय मैं आकर तुमको नई दुनिया का वर्सा देता हूँ। रचयिता बाप ज़रूर स्वर्ग का सुख ही देंगे ना। शिव का सोमनाथ मंदिर भी है; परन्तु कोई से भी पूछो– सोमनाथ कब आया? क्या आकर किया? बताए न सकेंगे। बाप खुद बतलाते हैं– 5000 बरस हुआ, जबकि मैंने क्या आकर किया। यह ज्ञान का सोमरस पिलाया था। अब भारतवासियों पर माया रावण का ग्रहण लगा हुआ है; इसलिए दे दान तो छूटे ग्रहण। ग्रहण लगता है तो सभी दान देते हैं क्या? अब भारत पर ग्रहण लगा हुआ है। (य)ानी काम चिक्षा पर बैठ काले बन गए हैं। फिर बाबा काले से गौरा बनाते हैं। यह तो बाप बैठ समझाते हैं, कोई चिल्लाते थोड़े ही हैं– शिवोहम्, ब्रह्मोहम्। शिवबाबा तो एक ही है। उनका आकार भी है। मंदिरों में पूजते हैं। कृष्ण का मंदिर साकार मनुष्य का है। देवताएँ हैं सूक्ष्म। बाप कहते हैं– मैं निराकार ज्योति स्वरूप हूँ। तुम्हारी आत्मा भी ज्योति स्वरूप थी। अभी ज्योत बुझ गई है। घोर अंधियारे में हैं; इसलिए जब कोई मरते हैं तो दीवा जलाते हैं कि अंधियारा न हो। यह चित्र भी दिखाते हैं– सभी घोर अंधियारे में हैं। सतयुग में थोड़े ही अंधियारे में जाते होंगे। तो अब बाप बैठ समझाते हैं– कोटों में कोऊ जो कल्प पहले बच्चे बने थे वो ही सिकीलधे बच्चे बनेंगे, जिन्हों को ही सुख के संबंध में भेजा था। हरेक को अपना–2 पार्ट बजाने आना है। अपने–2 समय पर आकर अपना–2 धर्म स्थापन करते हैं, फिर इनकी संख्या वृद्धि को पाती है। वो धर्म स्थापन करते हैं, यह तो किंगडम स्थापन होती है। तो तुम थोड़े ही जानते थे कि बाप से हम क्या माँगे? तुमको तो कुछ माँगना ही नहीं है। बाप का फर्ज़ है आकर बच्चों (को) वर्सा देना, लायक–समझदार बनाना। माया ने तुमको बेसमझ, पत्थर बुद्धि बनाया, हम पारस बुद्धि बनाते हैं। तो तुम थोड़े ही जानते थे, हमको पत्थर से पारस किसने बनाया। तो अब बाप पहचान देते हैं। तुमको माँगने की दरकार नहीं। तुम क्या जानो, बाप से क्या माँगना है, बाप कहाँ है। तुम तो घोर अंधियारे में थे। आप ही पूज्य..... यह हम भारतवासी ही बनते हैं। हम पवित्र गृहस्थ धर्म वाले थे। अब माया ने अपवित्र बनाया है। तुम भारतवासी 5000 बरस पहले सतयुग में थे। फिर ज़रूर रिपीट करेंगे। क्रिश्चियन थोड़े ही जानते हैं कि क्राइस्ट फिर कब आवेगा। सृष्टि एक ही है। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी यही है, और कोई है नहीं। बाप समझाते हैं– इस समय सभी में 5 विकार व्यापक हैं। वो फिर कह देते, ईश्वर सर्वव्यापी है। ईश्वर तो जन्म–मरण रहित है, फिर सभी ईश्वर कैसे होंगे? तुमने 84 जन्म भोगे हैं। हिसाब बिल्कुल क्लीयर है। भक्त, भक्ति करते हैं भगवान को पाने लिए। भगवान को तो आना ही है ना। उन गुरुओं आदि ने तो झूठे गपोड़े सुनाए तुमको दुबण में फँसाया है। कहते हैं– प० सर्वव्यापी। क्या तुम सभी बाप ही बाप हो? किसने तुमको यह उल्टा ज्ञान सुनाया है? यह भी ड्रामा में है। कल्प पहले भी तुम बच्चों को कहा था कि इन गुरुओं–गुसाईं आदि कोई की बात न सुनो। सभी पतित हैं। मैं इस ब्रह्मा मुख से तुमको सभी शास्त्रों का राज़ समझाता हूँ। ब्रह्मा को शास्त्र दिखाए हैं ना। सूक्ष्मवतनवासी तो ब्रह्मा नहीं। उनको कौन–सा शास्त्र देंगे? सर्व शास्त्र मई गीता है। मैं फिर से सहज ज्ञान देता हूँ, जिसका नाम गीता रखा है। मैं तो सन्मुख तुमको पढ़ाता हूँ। तुम अणपढ़े बुद्धू हो। शास्त्र पढ़े हुए तुमसे भी जास्ती ... है। तुम अण पढ़े अच्छे हो। तुमको सा० भी कराता हूँ। यह बाबा कहते– मैंने नौधा भक्ति सा० के लिए तो .....। बाबा कहते हैं– तुमको क्या पता कि किसका सा० करना है। तुम बच्चों को विनाश–स्थापना का सा० कराया है। ..... को क्या पता कि भगवान से क्या लेना चाहिए। शान्ति चाहिए? तुम एक की शान्ति से क्या होगा! सारी

दुनिया को सुख–शान्ति चाहिए; परन्तु सभी को सतयुग में तो नहीं ले जाऊँगा ना। वैराइटी धर्म हैं। हरेक अपना–2 पार्ट अपने–2 समय पर बजाने आते हैं। अब एक अद्वैत देवता धर्म की स्थापना करता हूँ। और द्वैत धर्म सभी विनाश हो जावेंगे। मैं आकर देवता धर्म का सैपलिंग लगाता हूँ। अब इस मौत की जान्डर(ग्राइंडर) में सभी सरई(सरसों) मिसल पीसेंगे। न चाहते, न कोई माथा मारते हुए भी, सभी को मुक्ति देता हूँ। यह बना–बनाया ड्रामा है। क्रियेटर, डायरैक्टर, मु(ख्य) एक्टर्स– सभी को जानना चाहिए ना। आधा कल्प तुमने धक्के खाए हैं। माँगते–2 कंगाल बन गए। अब तुम क्या माँगेंगे! मैं तुम्हारा बाप हूँ। तुमको दुख से छुड़ाए, सुखधाम में भेज देता हूँ। बच्चे जानते हैं, बाप से वर्सा मिलना ही है, फिर माँगे क्या! आधा कल्प तुमको मत मिली है असुरों की। तुम्हारे बाप–टीचर–गुरु, सभी आसुरी सम्प्रदाय हैं। तुमको विकारी बनाए दिया है। मैं आकर निर्विकारी बनाता हूँ कल्प पहले मुआफिक। सारी राजधानी बननी है। उनको कहा जाता है– किंगडम इस्टैब्लिशड बाए गॉड। अभी तो रावण की किंगडम है। बाकी शास्त्रों में तो दंत–कथाएँ हैं। अब तुमको कहता हूँ– मामेकम् याद करो। तुम गाते भी हो– अवर संग तोड़..... तुम पर कुर्बान जाऊँ। किस पर? क्या कृष्ण पर? वो तो था सतयुग में। यह समय फिर से आया है। मैं आया हूँ, तुम बलिहार जाते हो। बाप आप ही बच्चों को बेहद का वर्सा देते हैं। बच्चे बाप से कैसे लेंगे! यह सच्ची गीता–पाठशाला है, बड़ा कॉलेज है, जहाँ मनुष्य से देवता एवर हेल्दी–वेल्दी बनते हैं। और कोई हस्पताल में एवर हेल्दी कोई बन सकते हैं? बिल्कुल नहीं। यहाँ तुमको बाप कहते हैं– तुम भारतवासी एवर हेल्दी–वेल्दी थे ना! वहाँ रोग का नाम न था। माया ही नहीं थी। मैं आया हूँ तुमको वर्सा देने। लाडले बच्चे, अब फॉलो मदर जगदम्बा और फॉलो फादर जगतपिता। तुम भी उनकी गद्दी के वारिस बनो। इसमें संशय की तो कोई बात ही नहीं। भगवान के सिवाय भारत को स्वर्ग कौन बनावेगा! क्या सन्यासी? क्या कुत्ते–बिल्ले? बाप समझाते हैं तो यहाँ समझते हैं फिर बाहर जाने से माया कुछ न कुछ कर देती है; क्योंकि योग का कवच नहीं रहता। इसमें वाइलेंस की बात नहीं। यह शक्ति सेना है नॉन वाइलेंस। वन्दे मातरम् भारत माता शक्ति रीइनकारनेशन। हम बाप के बच्चे हो गए। बाप सर्वशक्तिवान शक्ति देते हैं। जैसे इंजेक्शन भरा जाता है ना, वैसे यह भी उनसे पवित्र बनने लिए शक्ति लेते हैं। मेहनत इसमें है। योग और नॉलेज सहज है। बीज और झाड़। बाबा समझाते हैं तो बहुत अच्छा है; परन्तु आश्चर्यवत्..... कोई धारणा करन्ति, कोई नहीं करन्ति। कोई राय पर चलते हैं, कोई नहीं चलते हैं। बाप खुद कहते हैं– मैं दूर देश के रहने वाला इस पराए देश आया हूँ। तुम सीताओं को बॉण्डेज से छुड़ाने आया हूँ। कल्प–2 ऐसे समय पर आता हूँ। ड्रामा है ना! कितने अवतार दिखाए हैं! अच्छा, 24 अवतार यानी फिर कच्छ–मच्छ, भित्तर–ठिक्कर में मुझे क्यों ले आए हो? तो बाप समझाते हैं– सब कुछ करके फिर अपना आप छिपाया है। भक्तिमार्ग में भी तुम्हारी सेवा करता आया हूँ। तुमको सुख दे मैं छुप जाता हूँ। मेरे को वहाँ देवताएँ भी नहीं जानते। ज्ञान मिला बाकी क्या! मैं आता ही हूँ स्वर्ग के सुख देने। तुम तो पाई–पैसे की चीज़ माँगते हो– पुत्र चाहिए, यह चाहिए। अब मैं हीरे जैसा बनाने आया हूँ। मुझे ऑरगन्स तो चाहिए ना! तुमको भी ऑरगन्स है ना। चैम्बूर :– कहते हैं– बाबा, हम कब भक्त बने? बाप कहते हैं– द्वापर से रावण राज्य शुरू हुआ। तुम अपने धर्म को छोड़, और धर्मों पिछाड़ी क्यों पड़ते हो? गीता माता को छोड़ तुम व्यभिचारी क्यों बनते हो? व्यभिचारी बनने से गीता माता को भूल गए हो। गीता भगवान ने गाई, उ(स)से कृष्ण ने वर्सा लिया। मैं इतना तो छिप गया हूँ जो तुम कुत्ते–बिल्ले, भित्तर–ठिक्कर सभी में ढूँढ़ते हो। वण्डर तो देखो! अब ... मैं ही आकर खुद अपना परिचय देता हूँ। मम् प्राणों, बापदादा ...इतवार 13 तारीख को देहली से कानपुर थोड़े दिनों लिए जा रहे हैं। कानपुर से फिर देहली आने का प्रोग्राम है। कानपुर से कब लौटते हैं सो फिर समाचार लिख देंगे (अधूरी मुरली)